Chapter- 6

नमक का मोल

STUDY NOTES

किसी नगर में एक राजा रहता था। वह स्वयं को बहुत समझदार तथा शक्तिशाली समझता था। वह उन चापलूस लोगों को पसंद करता था जो उसकी बड़ाई करते थे। उस राजा की तीन बेटियाँ थी। एक दिन उसने अपनी तीनों बेटियों से पूछा कि वे उससे कितना प्यार करती हैं। पहली ने कहा सोने के समान, दूसरी बेटी ने कहा समुद्र की तरह गहरा तथा सोने की तरह शुद्ध। तीसरी बेटी थोड़ी शर्मीले स्वभाव की थी। उसने पिता से कहा कि वह उसे उतना ही प्यार करती है जितना कि एक बेटी अपने बाप से करती है राजा के बार-बार पूछने पर उसने जवाब दिया कि वह अपने पिता को नमक की तरह प्यार करती है। तीसरी बेटी का जवाब सुनकर राजा रुष्ट हो गया। उसने अपनी दोनों बेटियों की शादी तो राजकुमारों के साथ की परंतु तीसरी का विवाह भिखारी से कर दिया। राजकुमारी ने अपने पिता की आज्ञा को सहर्ष स्वीकार किया और पति के साथ चली गई। उसके पति ने उसे बताया कि वह भिखारी नहीं है वह तो यहाँ पर काम की तलाश में आया था। राजकुमारी बहुत समझदार थी। उसने अपने गहने बेचकर एक ज़मीन का टुकड़ा खरीद लिया और वे उस पर खेती करने लगे। धीरे-धीरे उन्होंने गाँव की सारी ज़मीन खरीद ली। उन्होंने एक घर भी खरीद लिया और ऐशो-आराम से जीवन बिताने लगे। एक दिन उन लोगों ने राजा को दावत पर बुलाया। राजकुमारी ने थाली में तरह-तरह के व्यंजन परोसे। वह घूँघट में थी इसलिए राजा उसे पहचान नहीं पाए। जब राजा खाना खाने लगे तो सारा खाना बिना नमक के बना हुआ था। यह देखकर राजा क्रोधित होते हुए बोले कि उन्हें बिना नमक का भोजन देकर उनकी बेइज़्ज़ती के लिए वहाँ बुलाया है। तभी राजकुमारी घूँघट उठाकर बोल पड़ती है कि पिता जी तो आपको नमक सोने, हीरे-मोती से अधिक पसंद है न। अब राजा को अपनी गलती का अहसास हो गया और उसने अपनी बेटी से माफ़ी माँगी तथा अपना सारा राज्य अपने दामाद व बेटी को दे दिया।